# बुंदेलखंड के मूर्तिशिल्प

महेन्द्र वर्मा

Scanned with OKEN Scanner

प्रथम संस्करण : शक 1929 (2008)

© लेखक

मूल्य : 70.00 रुपये

ISBN : 81-230-1360-4

A&C-HIN-OP-080-2007-08

अपर महानिदेशक(प्रभारी), प्रकाशन विभाग,
सूचना और प्रसारण मंत्रालय,
भारत सरकार, सी.जी.ओ. काम्प्लेक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली-110 003
वेबसाइट : http://www.publicationsdivision.nic.in

संपादन : सीमा ओझा

आवरण एवं पुस्तक सज्जा : वासंती परदेसी

**विक्रय केंद्र:** प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, सी.जी.ओ. काम्प्लेक्स, लोदी रोड, **नई दिल्ली**-110003; हॉल नं. 196, पुराना सचिवालय, **दिल्ली**-110054; कामर्स हाउस, करीम भाई रोड, बालार्ड पायर, **मुम्बई**-400038; 8, एस्प्लेनेड ईस्ट, **कोलकाता**-700069; 'ए' विंग, राजाजी भवन, बेसेंट नगर, **चेन्नई**-600090; प्रेस रोड, निकट गवर्मेंट प्रेस, **तिरुवनंतपुरम**-695001; ब्लाक नं. 4, प्रथम तल, गृहकल्प काम्प्लेक्स, एम.जी. रोड, नामपल्ली, **हैदराबाद**-500001; प्रथम तल, 'एफ' विंग, केंद्रीय सदन, कोरामंगला, **बंगलौर**-560034; बिहार राज्य सहकारी बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, **पटना**-800004; हाल नं.1, द्वितीय तल, केंद्रीय भवन, सेक्टर 8, अलीगंज, **लखनऊ**-226024; अम्बिका काम्प्लेक्स, प्रथम तल, पालदी, अहमदाबाद-380007; हाउस नं.-07, चेनीकुथी, न्यू कॉलोनी, के के बी रोड, **गुवाहाटी**-781003

टाइपसेट : **ज्योति लेजर टाइपसेटिंग**

मुद्रक : अंकिता आर्ट प्रिन्टर्स, 226, डीएसआईडीसी कॉम्पलेक्स, औखला फेस-1, नई दिल्ली-20.

Scanned with OKEN Scanner

# अनुक्रम

अध्याय-1 1

**बुंदेलखंड :** प्राचीन नाम एवं मान्यताएं, पौराणिक एवं धार्मिक महत्व, भौगोलिक स्थिति, राजनीतिक पृष्ठभूमि

अध्याय-2 13

**राजवंशों की निर्माण योजना :** शुंगकाल, गुप्तकालीन मंदिर, देवगढ़ का दशावतार मंदिर, प्रतिहारकालीन मंदिर, मड़खेरा का सूर्य मंदिर, जराय मठ, चंदेलकाल के मंदिर, चंदेल वास्तुकला, चंदेल मंदिरों की निर्माण परंपरा, चंदेलकालीन शिव मंदिर, विष्णु मंदिर, खजुराहो के विष्णु मंदिर, शाक्त मंदिर, सूर्य मंदिर, ब्रह्मा मंदिर, कलचुरिकाल

अध्याय-3 29

**बुंदेलखंड के मूर्तिशिल्प :** शुंगकालीन, गुप्तकालीन, प्रतिहारकालीन, कलचुरिकालीन मूर्तिशिल्प तथा चंदेलकालीन प्रतिमाएं

अध्याय-4 51

**मृण्मूर्तियां और मूर्तिशिल्प :**

मृण्मयी प्रतिमाओं की प्राचीनता, मौर्यकाल, शुंगकाल, कुषाणकाल, गुप्तकाल

अध्याय-5 63

**केश विन्यास :** मूर्तिशिल्प में केश सज्जा का प्रदर्शन, चंदेलकाल की केश सज्जा, प्रतिहारकाल की केश सज्जा, कलचुरिकाल की केश सज्जा

अध्याय-6 73

**प्रतिमाओं में आभूषणों की परंपरा**

शीर्षफूल, ग्रेवेयक, एकावलि, हार, गुच्छक हार, भुजबंध, कंकण, कटिबंध, मेखला, पैरों के आभूषण, छिन्नवीर, किरीट तथा करंड (मुकुट) मूर्तिशिल्पों में आभूषण

Scanned with OKEN Scanner

बुंदेलखंड गंगा, यमुना के दक्षिण तथा पश्चिम में बेतवा नदी से लेकर पूर्व में विंध्यवासिनी देवी के मंदिर तक, दक्षिण में चंदेरी, सागर तथा बिलहरीजिलों के साथ नर्मदा तक फैला हुआ है। इस क्षेत्र में यमुना, टौंस, धसान, बेतवा, काली सिंध आदि नदियों के किनारे पाषाणयुगीन संस्कृति के अवशेष मिले हैं। देवगढ़ का दशावतार मंदिर, प्रतिहारकालीन जराय मठ, बरुआ सागर तथा चंदेल शासकों द्वारा निर्मित खजुराहो के मंदिर यहां विकसित मूर्तिशिल्प तथा स्थापत्य के सर्वश्रेष्ठ नमूने हैं।

सुविख्यात कलाविद, इतिहासकार, एवं साहित्यकार डॉ. महेन्द्र वर्मा ने इस ग्रंथ में मूर्तिशिल्पों में केश सज्जा और आभूषणों पर अत्यंत ही शोधपरक और रोचक जानकारी दी है।

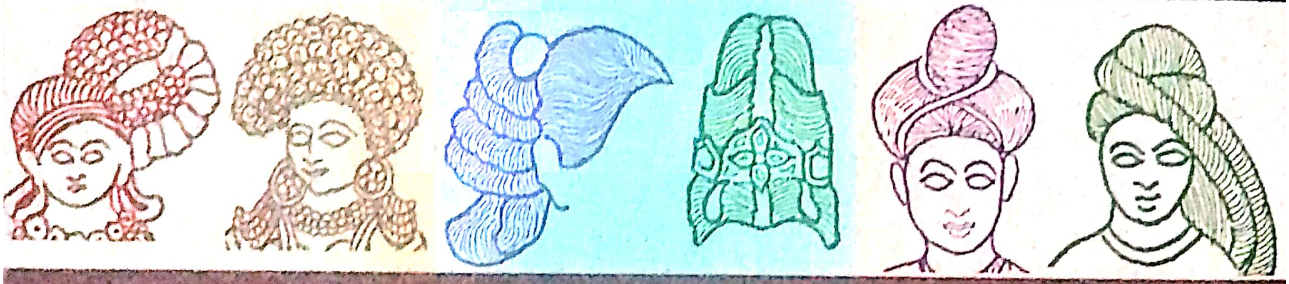

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

मूल्य 70.00 रुपये

PD BN ISBN 81-230-1360-4
A&C-HIN-OP-080-2007-08

Scanned with OKEN Scanner